

# INTERNATIONAL

# Conference

On

## Śabdārthatattvavimarsah

(शब्दार्थतत्त्वविमर्शः)

5 th & 6 th March, 2019

### Proceedings

Editors :

Dr. Swarup Singha,  
Dr. Uttam Biswas,  
Rajib Sinha,  
Asit Kr. Sau



*Organised by :*

Vidyasagar University  
Sanskrit Alumni Association



*In Collaboration with*

Department of Sanskrit,  
Vidyasagar University

**International Conference**  
**On**  
**Śabdārthatattvavimarśaḥ**  
**(शब्दार्थतत्त्वविमर्शः)**

प्रकाशनम्

5 th March, 2019

ISBN - 9789382-399452

मूल्यम् - ५००.००

विद्यासागरविश्वविद्यालयस्य संस्कृतविभागीयभूतपूर्वविद्यार्थिपरिषद्  
VIDYASAGAR UNIVERSITY SANSKRIT ALUMNI ASSOCIATION  
पश्चिममेदिनीपुरम्, पश्चिमवङ्गः

## विषयानुक्रमणिका

विषयाः

शाब्दिकानां शब्दस्वरूपविमर्शः	लेखकाः	पृष्ठङ्काः
स्फोटतत्त्वमीमांसा	जयदेवदिन्दा	1
शाब्दबोधः	अभिषेकमुखाज्जी	8
संक्षेपशारीरकानुसारेण वेदान्तवाक्यस्य अखण्डार्थप्रतिपादनपद्धतिः	डा. वामदेवसेनापतिः	12
व्याकरणशास्त्रे शब्दार्थसम्बन्धः	डा. देवाञ्जनदासः	15
साहित्यदर्पणदिशा अभिधालक्षणाव्यञ्जनाविमर्शः	बावलुप्रामाणिकः	17
ध्वनिचिन्तने शब्दार्थतत्त्वविमर्शः	भोलेश्वरप्रधानः	22
“न्यायवैशेषिकनये शब्दतत्त्वविमर्शः”	सोमनाथ-सेनापतिः	24
साहित्यशास्त्रे शब्दार्थतत्त्वम्	देवार्पिता व्यानार्जी	27
सांख्ये शब्दस्वरूपम्	दीपङ्करमिश्रेण	31
काव्यलक्षणोदितः शब्दार्थतत्त्वविमर्शः	गोविन्ददासः	36
वाक्यस्फोटस्य शाब्दबोधहेतुत्वनिरासः	श्रीमान् गोपाल आचार्यः	39
ओम्-इति शब्दतत्त्वम् ; तदेव एव जगत्कारणम्	कृष्णगोपालपात्रः	43
अलंकारचिन्तने सूर्याग्निसूक्ते	वाणेश्वरजाना	49
मीमांसानये शब्दतत्त्वविमर्शः	चन्दन-मण्डलेन	51
पदार्थबोधघटित-शास्त्रीयसिद्धान्तः	देवाशीषमिश्रेण	54
अर्थनिष्पत्तौ वैदिकस्वर-काव्यशास्त्रशक्त्योः सादृश्यपर्यालोचनम्	डा. खोकनभट्टाचार्यः	57
आस्तिकदर्शने स्मृतिशब्दार्थविमर्शः	मौमिता खाण्डया	61
भिक्षुशब्दानुशासनस्य कतिपयानां सूत्राणां तुलनात्मकमध्ययनम्	नाडुगोपालवेरा	65
साहित्यशास्त्रे अभिधा-लक्षणा-व्याञ्जनातत्त्वविमर्शः	निर्मलकुमारराहा	69
मालविकाग्निमित्रमिति दृश्यकाव्ये प्रयुक्तः वैदिकशब्दविमर्शः	निताइपालः	72
शब्दशक्तिविचारः	पापनचन्दः	74
वर्णसमान्याः-एकं विश्लेषणम्	पापियावेरा	76
बौद्धार्थनिरूपणम्: एकमध्ययनम्	परमेशःभट्टाचार्यः	80
भिक्षुशब्दानुशासने कर्मतत्त्वविमर्शः	पारमितारायः	88
रुय्यककृते अलंकारसर्वस्वे व्याञ्जनाविमर्शः	डॉ. प्रशान्तकुमारमहला	92
अलङ्कारस्य सप्तमवेदाङ्गत्वम्	डा. प्रितमरोजः	97
शब्दानुशासनशास्त्रदिशा शब्दार्थत्त्वनिरूपणम्	राइचरणकामलः	102
वागर्थीविवसम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये...	डा. रुवेलपालः	106
इत्याह्वयश्लोकप्रतिपादितशब्दार्थतत्त्वस्य विमर्शः	सनातन-दासः	112
श्रीप्रफुल्लकुमारमिश्रकृतिसम्भारस्य ‘तथापि सत्यस्य मुखम्’ पद्यकाव्ये	श्री श्यामल गोस्वामी	116
शब्दार्थतत्त्वविमर्शः	श्रीमन्तभद्रः	120
नामार्थतत्त्वमीमांसा	शौमित्राचार्यः	127
शाब्दबोधे तात्पर्यतात्पर्यनिर्णयः	सौरभमण्डलः	134
शाब्दबोधमीमांसा	सौभिकविशबासः	138
चितसुखदर्शनदिशा शब्दार्थविमर्शः	शुभमयपाहाड़ी	140
शब्दस्य लक्षणाशक्तिविमर्शः	उत्तमकुमारवेरा	143
शब्दस्यार्थप्रकाशे शक्तेः भूमिका		

76	আচার্য ভর্তৃহরির মতে শব্দব্রহ্ম	শিলা বিশাই	293
77	বাক্যপদীয়ে শব্দার্থতত্ত্বচিন্তন	সুবীর দলুই	296
78	কাব্যসাহিত্যে শব্দার্থবিবেচনা	সুব্রত কুমার মান্না	300
79	শব্দার্থতত্ত্ববিমর্শঃ	সুপর্ণা মণ্ডল	303
80	কাব্যশাস্ত্রে অভিধা লক্ষণা ব্যাঞ্জনা	সুমিত্রা পোড়িয়া	306
81	কাব্যপ্রকাশের আলোকে লক্ষণা	তরুণ কুমার ভূঞা	309
82	কিরাতার্জুনীয়ম্ মহাকাব্যে প্রথমসর্গে প্রযুক্ত শব্দসমূহের ঘণ্টাপাঠকানুসারে ব্যাকরণাত্মক বিশ্লেষণ	চন্দন মণ্ডল	312
83	মীমাংসাদর্শনে শব্দার্থতত্ত্ববিমর্শ	নমিতা সাহা	317
84	উপনিষদ ও শব্দব্রহ্ম	প্রসেনজিৎ মণ্ডল	323
85	গীতাসু শব্দার্থতত্ত্ববিমর্শঃ	রাজীব ভট্টাচার্য	325
86	সাহিত্য শাস্ত্রে শব্দার্থ তত্ত্ব বিমর্শ	তুষার পাত্র	326
87	কাব্যপ্রকাশানুসারে অভিধা, লক্ষণা, ব্যাঞ্জনা - পর্যালোচনা	রানু কোলে	330
88	শব্দের আলোকে ব্রহ্ম	সুকন্যা সরকার	333
89	বৈয়াকরণদের স্ফোটতত্ত্ব মীমাংসা	অনিমা সান্থ	336
90	শব্দবোধের কারণসমূহ সমীক্ষা	দীনবন্ধু মণ্ডল	341
91	परमलघुमञ्जूषायाम् शब्दशक्तिनिरूपणम्	प्रलयः शङ्करः अधिकारि	344
92	श्रीशिवरामेन्द्रसरस्वतीविरचितसिद्धान्तरत्नप्रकाशस्थितप्रातिपदिकार्थविचारविमर्शः	सुकान्तमारा	347
93	Vamana's notion of <i>lakṣaṇa</i> in the light of his definition of <i>vakrokti</i>	Dr. Pratim Bhattacharya	352
94	The Logico-Linguistic Analysis Of Sabda Pramana : With Special Reference To Advaita Vedanta	Dr. Rasmita Satapathy,	356
95	The word 'Tātparyā' and its meaning in Indian Rhetoric Grammar	Dr. Tarak Jana,	360
96	Exploring The Meaning Of The Terms Used In The Nyāyasutra	Junashmita Bhuyan	363
97	लिङ्गार्थविमर्शः	स्नेहलदेशपाण्डेः	368
98	अभिधा-लक्षणा-ब्याञ्जनाविमर्शः	सुप्रिया बेरा	378
99	शब्दबोधे केचन विषयाः न ते शब्दप्रतिपाद्याः	कृष्णपददास-अधिकारि	383



নিমজ্জিত সূর্য এবং প্রতাপসময়ে অবসন্ন, ক্ষীণখন এবং আপদ সাগরে নিমগ্ন আপনাকে শত্রুরূপ অন্ধকার দূর করে দিনের সূচনার উদীয়মান সূর্য এবং আপনাকে লক্ষ্মী পুনরায় আশ্রয় করণ। মল্লিনাথ বলেছেন — 'সূর্যোহপি সায়াং সাগরে মজ্জতি অপরেদ্যুকশ্মজুতীতি আগমঃ' অর্থাৎ সূর্য সন্ধ্যাকালে সাগরে মগ্ন হন এবং পরের দিন উথিত হন।

কিন্তু 'কিরাতার্জুনীয়ম্' গ্রন্থে 'ইতি' শব্দ পরিসমাপ্তিজ্ঞাপক, 'মহাকাব্যের ইতি' বলায় 'মহৎ' শব্দের দ্বারা লক্ষণের সমাপ্তি সূচিত হলে। এখানে বিধিসময়নিয়োগাৎ শব্দটি হেতুপক্ষমী। এছাড়াও বিধিশচ সময়শচ, স্বন্দ্ব। তয়োঃ নিয়োগঃ, ষষ্ঠীতৎ পুরুষ, তস্মাৎ, আবার আপৎ পয়োযৌ শব্দটি আপৎ পয়োযিঃ ইব, উপমিত কর্মধারায়। উপমিতং ব্যাখ্যাডিভিঃ সামান্যপ্রয়োগে (পা. ২/১/৫৬) সূত্রানুসারে, অধিকরণে সপ্তমী।

এইভাবে সার্বিক পর্যালোচনা থেকে বলা যেতে পারে, সমস্ত ব্যাকরণগত ক্ষেত্রগুলি টীকাকার মল্লিনাথ পাণিনি ব্যাকরণের সূত্রানুযায়ী ব্যাখ্যা করেছেন এবং স্থানে স্থানে একাধিক সূত্র ও বার্তিকের উল্লেখ করেছেন। তাই সবশেষে বলতে পারি 'কিরাতার্জুনীয়ম্' গ্রন্থের টীকাকারগণের মধ্যে টীকাকার মল্লিনাথ শাস্ত্রসম্মত বিভিন্ন শব্দ ও অর্থজ্ঞানের পরিচয় দিয়েছেন।

সংকেত সূচী :

কিরাত. — কিরাতার্জুনীয়ম্

প্. — পৃষ্ঠা

পা. — পাণিনিয়

বন. — বনপর্ব

সহায়ক গ্রন্থসূচী :

- ১। কিরাতার্জুনীয়ম্, ভারবি, ডা. সুখাকর মালবীয়ঃ, চৌখম্বা কৃষ্ণদাস অকাদমী, বারাণসী, ২০১৪ (তৃতীয় সংস্করণ)।
- ২। কিরাতার্জুনীয়ম্, ভারবি, পণ্ডিত হৃষীকেশ শাস্ত্রী ও ডঃ প্রদ্যোতকুমার বন্দোপাধ্যায়, দি ঢাকা স্টুডেন্টস্ লাইব্রেরী, ২০১৫।
- ৩। কিরাতার্জুনীয়ম্ (প্রথমঃ সর্গঃ), ভারবি, ডঃ অনিল চন্দ্র বসু, সংস্কৃত বুক ডিপো, কলকাতা, ২০০৭।
- ৪। অষ্টাধ্যায়ী, পাণিনি, তপন শঙ্কর ভট্টাচার্য, সংস্কৃত বুক ডিপো, কোলকাতা, ১ম সংস্করণ।
- ৫। বৈয়াকরণ সিদ্ধান্ত কৌমুদী (১ম ভাগ), ভট্টোজি দীক্ষিত, সম্পাদক গিরিধর শর্মা ও পরমেশ্বরানন্দ শর্মা, মোতীলাল বানারসীদাস, দিল্লী, ১২ তম সংস্করণ, ২০১৪।
- ৬। অমর কোষ বা অমরচন্দ্রিকা, সম্পাদক অধ্যাপক শ্রীমদগুরুনাথ বিদ্যানিধি - ভট্টাচার্য, সংস্কৃত পুস্তকভান্ডার, কলকাতা, নববর্ষ-১৪১৭।
- ৭। বৈয়াকরণ সিদ্ধান্ত কৌমুদী (সমাসপ্রকরণম) ডঃ শ্রী বিশ্বরঞ্জন বেদব্যাকরণতীর্থ, সংস্কৃত বুক ডিপো, কলকাতা, ২০১৬।
- ৮। মহাভারতম্ (বনপর্বঃ) শ্রী যদুপতি ত্রিপাঠী, বি.এন. পাবলিকেশন্স, কলকাতা, নববর্ষ-১৪১৭।

অধ্যাপক চন্দন মন্ডল  
গড়বেতা কলেজ, পশ্চিম মেদিনীপুর